

प्रवास के समय भगवान राम को शबरी ने ऐसे मीठे बेर खिलाए, जो उसने स्वयम् चखे और चुन-चुन कर भगवान राम के लिए सुरक्षित रख दिए थे।

भीषण वि. (तत्.) 1. भयानक, डरावना, घोर, उग्र 2. दुष्ट, विकट 3. सामान्य की अपेक्षा बहुत अधिक तीव्र।

भीषणता स्त्री. (तत्.) भीषण होने की अवस्था, भयंकरता, उग्रता, विकटता।

भीष्म पुं. (तत्.) गंगा के गर्भ से उत्पन्न राजा शांतनु का पुत्र, देवव्रत, गांगेय, महाभारत के युद्ध में प्रथम कौरव सेनापति टि. आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत की प्रतिज्ञा लेने के कारण भीष्म कहलाए, यह एक भीष्म प्रतिज्ञा थी।

भीष्मक पुं. (तत्.) कृष्ण की पत्नी रुक्मिणी के पिता तथा विदर्भ देश के राजा।

भीष्म-पंचक स्त्री. (तत्.) कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन टि. ऐसा माना जाता है कि पांडवों के दूत बनकर जब श्रीकृष्ण हस्तिनापुर आए थे तब कृष्णजी के कहने पर भीष्म पितामह ने इन पाँच दिवसों की पूजा आरंभ की थी।

भीष्म पितामह पुं. (तत्.) महाभारत में वर्णित एक पात्र टि. तीन पीढ़ियों तथा हस्तिनापुर के संरक्षण का उत्तरदायित्व संभालने के कारण पितामह कहलाए, पांडव और कौरव दोनों ही भीष्म को 'पितामह' संबोधन से ही अभिहित करते थे, इसी कारण भीष्म, भीष्म पितामह कहलाए।

भीष्म-प्रतिज्ञा स्त्री. (तत्.) 1. भीष्म की आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा 2. कठोर प्रण करना।

भीष्मसू स्त्री. (तत्.) भीष्म को जन्म देने वाली अर्थात् 'गंगा'।

भीष्माष्टमी स्त्री. (तत्.) माघ मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि जो भीष्माष्टमी के नाम से प्रसिद्ध है।

भुंडा वि. (देश.) 1. सींगरहित जानवर 2. दुरात्मा 3. भद्दा व्यक्ति।

भुकड़ी स्त्री. (देश.) सड़ी हुई चीज में लगी फफूँदी।

भुखड़ वि. (तद्.) जिसको हमेशा भूख लगी रहती हो, ज्यादा भूखा लाक्ष. दरिद्रता की निशानी।

भुक्त वि. (तत्.) 1. जो खाया हुआ हो या खाया गया हो 2. भोग की गई वस्तु, उपयोग में लाया गया 3. अनुभव किया गया तथ्य 4. भोग के लिए स्थापित 5. भुनाया गया चेक आदि।

भुक्ति स्त्री. (तत्.) 1. खाद्य पदार्थ, भोजन 2. विषयोपभोग 3. किसी चीज पर अधिकृत मालिकाना 4. ज्यो. ग्रहों का किसी राशि में क्रमशः एक-एक अंश करके जाना।

भुक्तिवर्जित वि. (तत्.) जिसका उपभोग करना मना हो।

भुखमरा वि. (तद्.) 1. भोजन न मिलने के कारण मरने वाला 2. अत्यंत भूखा 3. अधिक अन्न न मिलने से दुखी या व्यग्र।

भुगतना अ.क्रि. (तद्.) 1. अनचाहे फल को सहन करना 2. न चाहते हुए भी परिस्थिति के कारण किसी की कष्टप्रद जिम्मेदारी लेना।

भुगतान पुं. (तद्.) 1. भुगताने की क्रिया या भाव 2. धन, कर्ज, चेक आदि चुकाना, या अदायगी जैसे- कर्ज का भुगतान, किसी वस्तु की कीमत का भुगतान।

भुच्च पुं. (देश.) बड़ा मूर्ख, गँवार।

भुजंग पुं. (तत्.) 1. साँप, नागराज 2. उपपति, अवैध पति या जार 3. स्वामी 4. राजा के पास रहने वाला विदूषक 5. आश्लेषा नामक एक नक्षत्र 6. सीसा 7. कविता में आठ की संख्या वि. कामी, लुच्चा या लंपट।

भुजंगनिसृता स्त्री. (तत्.) निसोथ नामक एक औषधीय लता।

भुजंगप्रयात पुं. (तत्.) काव्य. एक समवर्णिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में 4 यगण के योग से 12 वर्ण होते हैं।